कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937
कृषि लोक,खंड 03 (02): 87-90, 2023

वर्षा ऋतु में फलदार पौधों की देखभाल

रवि प्रताप[1] और डॉ. राम नरेश[2]

[1]फल विज्ञान फल विज्ञान विभाग उद्यान महाविद्यालय
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय नवाबगंज कानपुर उत्तर प्रदेश

[2]सस्य विज्ञान, भा. कृ. अनु. परि.-अटारी, कानपुर, उत्तर प्रदेश

Received: **January, 2023;** ***Revised:*** **February, 2023** ***Accepted:*** **February, 2023**

भारत में खेती मुख्य रूप से हर वर्ष होने वाली वर्षा पर निर्भर करती है। आता मानसून के आगमन के संकेत भर से ही सभी का हृदय प्रफुल्लित होता है विशेषकर कृषकों का जिनके लिए इस वर्षा का बहुत महत्व है। जुलाई.अगस्त के समय होने वाली वर्षा जहां गर्मी की तपिश से राहत दिलाती है वही दूसरी ओर फल वृक्षों के बागों में खरपतवार विभिन्न रोगों एवं कीटों का प्रकोप भी बड़ा जाता है। फलों के सफल उत्पादन के लिए बागों में नित्य की जाने वाली कृषक क्रियाओं का विशेष महत्व है। जुलाई-अगस्त में बागों में पानी के निकास की समुचित व्यवस्था करनी जरूरी है। विभिन्न फल के बागों में इस समय में किए जाने वाले कृषि कार्यों का विवरण प्रस्तुत है।

केले की देखरेख

जुलाई में पौधों से अवांछित पत्तियों को निकाल दें। पौधों के तनों के चारों ओर यदि मिट्टी नहीं चढ़ाई गई हो, तो जुलाई के प्रारंभ में यह कार्य अवश्य पूरा कर लें जिससे जल निकास का उचित प्रबंधन हो सके। जिन पौधों में फल लगे हों उन्हें बांस से बांधकर सहारा देना लाभप्रद रहता है। नए बाग लगाने का कार्य भी इस माह किया जा

e-ISSN No. 2583-0937

सकता है। इसके लिए तलवार की शक्ल के अंत:स्तारी अच्छे समझे जाते हैं। अंतः भूस्तारियों को रोगमुक्त भातृ पौधों से ही चयनित करें। भूस्तारी 3-5 माह पुराने, आकार में एक समान एवं छोटी अवधि वाली किस्मों जैसे नेन्द्रन, रस्थाली, पूवन, नेय पूवन, वजन में 1-1.5 कि.ग्रा. के तथा लंबी अवधि वाली किस्मों, कर्पूरवल्ली व लाल केला के लिए 1.5-2.0 कि.ग्रा. के होने चाहिए। यदि रोपण हेतु सूक्ष्म प्रवर्धित पौधों को लेना है तो 30 सें.मी. लंबे द्वितीयक दृढ़ीकृत, पांच से.मी. मोटाई लिए कम से कम पूरी तरह से खुले हुये स्वस्थ पत्तों वाले पौधों का ही चुनाव करें। चयनित भूस्तारियों के किसी भी सड़े हुए भाग को हटाने के लिए सतही परतों के साथ-साथ सभी जड़ों को भी खुरचकर दिया जाना चाहिए। फ्यूजेरियम म्लानि रोग से बचाव हेतु रोगनिरोधी उपाय के रूप में 0.2 प्रतिशत कार्बेन्डाजिम के बोल में छिले हुये भूस्तारियों को 15-20 मिनट तक डुबोकर रखें। उपचारित पौधों को रात भर छाया में रखें तथा अगले दिन रोपण करें।

आम

मध्यम पकने वाली किस्मों के फलों को तोड़कर जुलाई में बाजार भेजने की समुचित व्यवस्था करें। फलों को 10 मि.मी. डंठल के साथ प्रातःकाल अथवा संध्याकाल में तोड़ना चाहिए। तुड़ाई के तुरंत पश्चात डिसैपिंग (डंठल से निकलने वाले स्राव को पृथक करना) करना चाहिए, जिससे फलों की गुणवत्ता बनी रहती है। तुड़ाई उपरांत फलों का श्रेणीकरण कर एवं कटे-फटे खराब फलों को अलग कर लेना चाहिए। फलों के परिपक्वन में एकरूपता लाने के लिए उन्हें ईथरेल 700 पीपीएम कार्बेन्डाजिम 500 पीपीएम के + 521 डिग्री सेल्सियस गुनगुने पानी के घोल में 5 मिनट के लिए उपचारित करना चाहिए। बौनी किस्मों में फसल की तुड़ाई सिकेटियर द्वारा तथा ओजस्वी किस्मों में 'मैंगो हार्वेस्टर ' का उपयोग करनी चाहिए।

तनाछेदक और पत्तियों को हानि पहुंचाने वाले कीटों से रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस (0.05 प्रतिशत) का छिड़काव करें। जुलाई के दूसरे पखवाड़े में फलों की तुड़ाई के बाद प्रति वृक्ष 500 ग्राम की दर से नाइट्रोजन देनी चाहिए। एंथ्रेक्नोज से बचाव के लिए 0.125 प्रतिशत (125 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) ब्लिटॉक्स के घोल का छिड़काव करें। यदि बरसात पर्याप्त हो, तो मई-जून में खोदे गए गड्ढों में रोपाई का कार्य भी इसी माह शुरू किया जा सकता है। ध्यान रहे कि रोपाई का कार्य सायंकाल अथवा जिस दिन हल्की-हल्की बरसात हो रही हो, उसी दिन करना चाहिए। रोपाई के बाद पौधों के चारों तरफ की मिट्टी को अच्छी तरह से दबा दें और उसके तुरंत बाद हल्की सिंचाई अवश्य करें। यह माह विनियर कलम द्वारा पौधों को तैयार करने के लिए सबसे उपयुक्त समय है। अगस्त में पछेती पकने वाली किस्मों के फलों की तुड़ाई करें तथा श्यामव्रण (एंथ्रोक्नोज) से बचाव के लिए ब्लिटॉक्स का दूसरा छिड़काव करें। वृक्षों में गोदार्ति की समस्या हो, तो कॉपर आक्सीक्लोराइड (0.2 प्रतिशत) + बुझा हुआ चूना (0.1 प्रतिशत) मिश्रण के घोल का ऊपर से छिड़काव करें। अगले वर्ष में नए पौधे तैयार करने के लिए मूलवृंत हेतु फलों की गुठलियों को एकत्रित करके पौधशाला में बुआई करें। यदि जुलाई में किसी कारणवश विनियर कलम न की जा सकी हो, तो अगस्त में कलम करना न भूलें।

अमरूद

जुलाई का माह बाग में रोपण, रिक्त स्थानों की पूर्ति एवं पौधे तैयार करने के लिए आदर्श होता है। गूटी या कलम से तैयार अमरूद के पौधों को मृदा गेंद के साथ 45x45x45 सें.मी. के पहले से खुदे गड्ढों के बीचों-बीच रोपित करना चाहिए। रोपित पौधों को तुरंत सिंचित करना चाहिए। इसके बाद तीसरे दिन और फिर प्रत्येक 10 दिनों के अंतराल पर अथवा आवश्यकतानुसार पानी देना चाहिए। श्यामव्रण रोग को नियंत्रित करने के लिए, कार्बोण्डाजिम (2 ग्राम प्रति लीटर) का फलों पर और बोड़ों मिश्रण(3:3:50) अथवा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (3 ग्राम प्रति लीटर) का तनों या पत्तियों पर छिड़काव करें। पुराने या स्थापित बगीचों में 0.3 प्रतिशत बोरेक्स का 15 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें। बात में कीटों का प्रकोप हो बाग में कीटों का प्रकोप होने पर

e-ISSN No. 2583-0937

मोनोक्रोटोफॉस का 2 मिलीलीटर प्रति लीटर या नीम तेल का 3% की दर से 21 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें। सर्दियों के मौसम वाली फसल के लिए फूल आने से पहले 0.4% बोरिक एसिड का छिड़काव करें। इससे फलों के आकार और उपज में वृद्धि हो सकती है। फलों के वर्तिकाग्र सड़न की रोकथाम के लिए कार्बेण्डाजिम (2 ग्राम प्रति लीटर) अथवा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (3 ग्राम प्रति लीटर) का फलन से पहले छिड़काव करें। हालांकि ध्यान रखा जाना चाहिए कि कोई भी छिड़काव तुड़ाई के 15 दिनों पहले नहीं किया जाये। अगस्त में, फल मक्खी के प्रकोप को कम करने के लिए गिरे हुए तथा ग्रसित फलों को नष्ट कर देना चाहिए। छेदक कीटों से भी अमरूद के बागों को काफी क्षति होती है। इससे बचाव के लिए बागों में नियमित रूप से कीटों को एकत्रित कर उन्हें नष्ट कर देना चाहिए। इसके अतिरिक्त, कीटनाशकों का फलन के समय या फलों के पकने से पहले छिड़काव करें। सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे-जिंक, लौह, तांबा, मैंगनीज इत्यादि के मिश्रण का भी 2 मि.ली. प्रति लीटर की दर से पौधों पर छिड़काव करें। म्लानि अथवा विल्ट से पौधों को बचाने के लिए उद्यान में निरंतर साफ सफाई करते रहें। इसके अतिरिक्त, नीम केक, जैविक खाद इत्यादि का भरपूर प्रयोग करें एवं बाग में निकासी समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करें।

पपीते की खेती

जुलाई में मैदानी क्षेत्रों के बागवान पपीते की पौध तैयार कर सकते हैं। किसी अच्छी किस्म का बीज चयन करके उसे किसी कवकनाशी से उपचारित करें। उपचारित बीजों को ऊंची उठी हुई क्यारियों में बोना चाहिए। पौधशाला में बीजों / पौधों को आर्द्रपतन रोग से बचाने के लिए क्यारियों को बुआई से 15 दिनों पहले ही 2.5 प्रतिशत फार्मेल्डिहाइड के घोल से उपचारित करने के 48 घंटे बाद पॉलीथीन से ढककर कीटाणुरहित कर लें। पुराने बाग खरपतवाररहित होने चाहिए तथा उनमें जल निकास की अति उत्तम व्यवस्था होनी चाहिए। सड़न रोग की रोकथाम के लिए ब्लिटॉक्स (0.3 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव पौधों के तनों एवं थालों में अवश्य करें एवं पौधों के तनों के चारों ओर मिट्टी चढ़ा दें। बीजों के अंकुरण के बाद थीरम (0.2 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें। उद्यान में जल निकास की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

आंवला

जुलाई-अगस्त में आंवला के बीजों की बुआई कर सकते हैं। अंकुरित पौधों को एक महीने बाद क्यारियों में स्थानांतरित किया जा सकता है, जहां वे अगले वर्ष जुलाई तक प्रवर्धन के लिए तैयार हो जाते हैं। जुलाई-अगस्त में ही आवला में पैबंदी कलिकायन या विरूपित छल्ला विधि द्वारा प्रवर्धन किया जा सकता है। साकुर शाखा का चुनाव ऐसे मातृवृक्ष से करना चाहिए, जो अधिक फलत देने वाला हो तथा कोटों एवं व्याधियों के प्रकोप से मुक्त हो। जुलाई अगस्त में ही कलिकायन के द्वारा तैयार पौधों को 8-10 मीटर (किस्म के अनुसार) की दूरी पर उद्यान में रोपित कर सकते हैं। नाइट्रोजन की आधी मात्रा जुलाई-अगस्त में आंवला में डालनी चाहिए। आंवले का रस्ट रोग आंवले की एक महत्वपूर्ण समस्या है। इसके नियंत्रण के लिए, घुलनशील गंधक (0.4 प्रतिशत) या क्लोरथैलोनिल (0.2 प्रतिशत) का तीन छिड़काव एक माह के अंतराल पर जुलाई से करने पर रोग पर नियंत्रण पाया जा सकता है। श्यामव्रण, आंवले की पत्तियों व फलों पर अगस्त से दिखाई देना प्रारंभ हो जाता है। इसके प्रबंधन हेतु, कार्वेण्डाजिम (0.1 प्रतिशत) का तुड़ाई से 15 दिन पूर्व छिड़काव करें। जुलाई-अगस्त में गुठलीछेदक का प्रकोप भी देखा जा सकता है। इसके नियंत्रण के लिए क्विनालफॉस या सेविन का 2 मि.ली. प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें।

अनार में बहार

जुलाई-अगस्त में पौध रोपण करना चाहिए तथा रोपण के तुरंत बाद सिचाई कर से मृग बहार हेतु अनार के पौधा में दी जाने वाली गोबर की खाद तथा फॉस्फोरस की पूरी एवं नाइट्रोजन और पोटाश की आधी मात्रा जुलाई में देनी चाहिए। खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग छत्रक के नीचे चारों और 8-10 से.मी. गहरी खाई बनाकर करना चाहिए। यदि गूटी द्वारा अनार का प्रवर्धन करना हो, तो जुलाई-अगस्त में एक वर्ष पुरानी पेन्सिल समान मोटाई वाली स्वस्थ,

e-ISSN No. 2583-0937

ओजस्वी. परिपक्व, 45-60 से.मी. लम्बाई की शाखा का चयन कर लेना चाहिए। चुनी गई शाखा से कलिका के नीचे 3 सें.मी. चौड़ी गोलाई में छाल पूर्णरूप से अलग कर देनी चाहिए। छाल निकाली गई शाखा के ऊपरी भाग में आई.बी.ए. 10000 पी.पी.एम. का लेप लगाकर नमीयुक्त स्फेगनम माँस चारों और लगाकर पॉलीथीन शीट से ढककर सुतली से बांधना चाहिए। इसके बाद जब पॉलीथीन से जड़ें दिखाई देने लगें, उस समय शाखा को काटकर क्यारी में स्थापित कर लें। तेलिया रोग से संक्रमित क्षेत्रों में मृग बहार नहीं लिया जाना चाहिए, अन्यथा जुलाई से अगस्त के दौरान रासायनिक जैवनाशियों, सलिसिलिक अम्ल, बोरॉन, कैल्शियम इत्यादि का नियमित रूप से प्रयोग करना पड़ेगा। यदि उद्यान में माहू कीट का प्रकोप हो तो प्रोफेनोफॉस-50 का 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अधिक प्रकोप होने की स्थिति में इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। अनार में फलों का फटना एक गंभीर समस्या है, जोकि शुष्क क्षेत्रों में अधिक होती है। इसके प्रबंधन हेतु नियमित रूप से सिंचाई करें एवं जिब्रेलिक अम्ल (जी.ए. 3) 15 पी.पी.एम. तथा बोरॉन 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें।

नीबूवर्गीय फल

जुलाई में लेमन व लाइम के फल पककर तैयार हो जाते हैं। उन्हें तोड़कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। इसी माह नया बाग लगाने का कार्य भी कर सकते हैं। कैंकर रोग से छुटकारा पाने के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लिन (250 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में) और नीम की खली (5 कि.ग्रा./100 लीटर पानी में) के घोल का छिड़काव करें। जल निकास की उचित व्यवस्था करें। रोपाई का कार्य यदि जुलाई में न हो सका हो, तो अगस्त में इसे पूरा करें। पर्णसुरंगी कीट से बचाव के लिए पौधशाला में रोगोर या मेटासिस्टॉक्स (300 मि.ली./100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। फलों की तुड़ाई - पूर्व गिरना एक गंभीर समस्या है। अतः अगस्त में 10 पी.पी.एम. न 2 4जी (1 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) का छिड़काव करें। सितम्बर में नाइट्रोजन की तीसरी मात्रा पौधों को अवश्य दें। इन फल वृक्षों में लगभग सभी सूक्ष्म तत्वों की विशेष कमी पाई जाती है। इनकी पूर्ति के लिए जिंक सल्फेट, मैग्नीशियम सल्फेट, बोरिक अम्ल, बुझा हुआ चूना (प्रत्येक एक कि.ग्रा./ 450 लीटर पानी आदि के संयुक्त घोल का छिड़काव करें । इस घोल में यदि 5 कि.ग्रा. यूरिया डाल ले, तो यह नाइट्रोजन की कमी को गूरा करता है।

खजूर की तुड़ाई

खजूर में इस दौरान फलों की तुड़ाई का कार्य होता है। वर्षा प्रारंभ होने के कारण खजूर पूरी तरह से नहीं पक पाते हैं। अतः उन्हें डोका अथवा प्रारम्भिक डाग अवस्था पर तोड़ लेना चाहिए। वातावरण में नमी के कारण तोड़े हुये कलों में फफूंद लगने की आशंका रहती है। अतः उन्हें शीघ्रातिशीघ्र प्रसंस्करण के लिए ले जाना चाहिए।

कटाहल की देख भाल

जुलाई में तैयार कटहल के फलों को तोड़कर बाजार भेजने की समुचित व्यवस्था करें। बागों में समुचित जल निकास का प्रबंध होना चाहिए। नए बाग लगाने का कार्य भी इसी माह प्रारंभ कर है। अगस्त में नर्सरी तैयार करने के लिए बीजों को फलों से निकाल कर पौधशाला में बोएं। गुटी द्वारा पौधे तैयार करने का भी यही उत्तम समय है।

लीची के देख भाल

जुलाई में पेड़ के नीचे की जमीन को हमेशा साफ रखें एवं जल निकास की समुचित व्यवस्था करें। नए बाग लगाने एवं गूटी द्वारा पौधे तैयार करने का कार्य भी बागवान इसी माह शुरू कर सकते हैं। जुलाई में पौधों में खाद व उर्वरक की समुचित व्यवस्था करें। यदि जुलाई में गूटी न बांधी गई हो तो यह कार्य अगस्त में समाप्त कर लें तथा बाग को खरपतवारों से मुक्त रखें। पुराने बागों में तनाछेदक कीट की समस्या रहती है। अगस्त में इस कीट की रोकथाम के लिए लीची में सुझाई गई विधि का प्रयोग करें। इन्हीं दिनों गूटी द्वारा तैयार किए गए पौधों को पौधशाला में अवश्य लगाएं।